कठोपनिषद्

प्रथम अध्याय, प्रथम वल्ली

ॐ सह नाववतु | सह नौ भुनक्तु | सह वीर्यं करवावहै |

तेजस्वि नावधीतमस्तु | मा विद्विषावहै ||१||

ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

संदर्भ:

प्रस्तुत मंत्र कथोपनिषद् के प्रथम अध्याय की प्रथम वल्ली से लिया गया है। यह ग्रंथारम्भ में मंगलाचरण का मंत्र है। इस मंत्र में आचार्य और शिष्य दोनों मिलकर ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

अर्थ:

ॐ अर्थात हे परमात्मा! हम दोनों की (नौ) साथ-साथ (सह) रक्षा करें (अवतु)। हम दोनों का (नौ) साथ-साथ (सह) भोजनादि द्वारा पालन करें (भुनक्तु)। साथ-साथ (सह) बल या पराक्रम (वीर्यं) को (हम दोनों) प्राप्त करते रहें (करवावहै)। हम दोनों का (नौ) पढ़ा हुआ ज्ञान (अधीतं) तेजस्वी (तेजस्वि) होवे (अस्तु)। (हम दोनों परस्पर) द्वेष नहीं करें (मा विद्विषावहै)। हे, परमात्मा हमें त्रिविध शांति प्राप्त हो (ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !)।

व्याख्या:

मानव तीन प्रकार के तापों से संतप्त है- आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक। इसी में विश्व के समस्त कष्टों का अंतर्भाव हो जाता है। भूत अर्थात विश्व के प्राणियों

द्वारा उत्पन्न किया गया कष्ट आधिभौतिक कोटि का होता है, जैसे- सर्पदंशजनित पीड़ा। देवजनित पीड़ा को आधिदैविक ताप कहते हैं, जैसे- इंद्रदेव द्वारा अतिवृष्टि या अनावृष्टि से उत्पन्न कष्ट। आत्मा से संबन्धित पीड़ा को आध्यात्मिक ताप कहते हैं। इसके अंतर्गत संसारपाश में बद्ध जीवन से कातर होना अथवा आत्मा के साधनभूत मन और इंद्रियों के अनुभव से उत्पन्न पीड़ाएँ।

प्रस्तुत मंत्र में इन त्रिविध पीड़ाओं से मुक्ति की कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की गयी है। इस सर्वप्रमुख प्रार्थना के अतिरिक्त ऋषि ने परमात्मा से अन्य निवेदन भी किया है जिसका गूढ़ार्थ है। गुरू और शिष्य स्तुति करते हैं, 'हम दोनों की साथ-साथ रक्षा करें'। इस स्तुति में त्रिविध कष्टों से ही रक्षा की बात कही गयी है। इसी प्रकार, 'हम दोनों का साथ-साथ भोजनादि द्वारा पालन करें' इस प्रार्थना से शरीर रक्षा की प्रार्थना की गयी है क्योंकि शरीर ही सर्वप्रथम धर्म का साधन है जो महाकवि कालिदास ने कुमारसंभव में इसी भाव को प्रकट करते हुए कहा है- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधानम्। 'साथ-साथ बल या पराक्रम को हम दोनों प्राप्त करते रहें', इस प्रार्थना में विद्यासंबंधी बल अथवा पराक्रम प्रदान करने की बात कही गयी है क्योंकि विद्या पिपासु गुरू और शिष्य को विद्या में पराक्रम प्राप्त करने की कामना हो सकती है । 'हम दोनों का पढ़ा हुआ ज्ञान तेजस्वी होवे', इस प्रार्थना का अर्थ है कि जो भी ज्ञान उन्हें प्राप्त होवे वह तेजोयुक्त हो अर्थात संसार में प्रकाशित हो ताकि विश्व-जनमानस उस ज्ञान से लाभान्वित हो सके । 'हम दोनों परस्पर द्वेष नहीं करें', इस प्रार्थना में गुरू और शिष्य दोनों अहंकार और द्वेष भाव से पूर्णतः मुक्ति चाहते हैं । ज्ञानवान जनों में यह दोष सामान्यतया आ ही जाता है, तभी तो भर्तृहरि को कहना पड़ा – बोद्धारो मत्सरग्रस्ता:।